Dr. Madan Paswan, History
Class: B.A. Part-II (H.) Paper-III
Topic: Iqta System...

Lecture No. 20 (1)
Date : 15.10.2020
Continue Lecture...

लकड़ी की चरखी के सम्बन्ध में इरफान हबीब का विचार है कि इसका जन्म भारत में हुआ। परन्तु चरखों के प्रयोग से तकली का महत्व समाप्त नहीं हुआ। बल्कि इसने तकली के परिभ्रमण में वृद्धि कर दी। चरखे की लकड़ी के फ्रेम के एक किनारे तकली को लगाया जाता था जिसे दूसरी ओर स्थित चक्र पर लगे पट्टे से जुड़े होने के कारण घुमाया जा सकता था।

इस प्रकार, चरखे में शक्ति संचालन तथा गतिपालक चक्र के सिद्धान्त निहित थे जिसके फलस्वरूप परिभ्रमण की अन्तहीन गतियाँ प्राप्त होती थीं।

चरखा एक ऐसा यंत्र है जो केवल कातने की गति बढ़ाता है, कोई गुणात्मक सुधार नहीं लाता। परिमाण में अधिक वृद्धि चरखे की देन थी। एक आकलन के अनुसार एक ही समय में वृद्धि कर एक निर्मित सूत का निर्माण कर सकता था। इसके परिणामस्वरूप अधिक सूत निर्मित होने लगा और लगातार अधिक वस्त्र भी बनने लगे होंगे।

सूती कपड़े के अतिरिक्त, रेशमी कपड़े की बुनाई में भी विकास हुआ था क्योंकि रेशम के कीड़े पालने की प्रथा दिल्ली सल्तनत में ही प्रचलित हुई।

भारतीय रेशम वस्त्र उद्योग पर इसका सीधा प्रभाव पड़ा होगा क्योंकि इससे पहले कच्चा रेशम बाहर से आयात किया जाता था।

रंगाई और छपाई :-

रंगाई हेतु वनस्पति तथा खनिज स्रोतों से प्राप्त विभिन्न प्रकार के रंगों का उपयोग किया जाता था। नीला, मजीठा और लाख इत्यादि अत्यधिक प्रचलित रंगों थे। निरंतर

के रूप में नील का प्रयोग किया जाता था। साथ ही रंगाई में भी इसका उपयोग होता था। भारतीय रंगरेज निमज्जन जैसी कई विधियों को अपनाते थे।

Continue Lecture ...